सारांशिका

शिक्षा से तात्पर्य है किसी प्रकार का ज्ञान अथवा विद्या प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने का अभ्यास। प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय है 'हिन्दी भाषा-शिक्षण के निकष पर असम के विद्यालयों का अनुशीलन (नगाँव जिले के विशेष संदर्भ में)' [THE STUDY OF THE SCHOOLS OF ASSAM BASED ON HINDI LANGUAGE TEACHING WITH SPECIAL REFERENCE TO NAGAON DISTRICT] । शैशवावस्था से ही मनुष्य की शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है। माता-पिता बच्चे के सामने कुछ ध्वनियाँ उच्चरित कर उसे अनुकरण के लिए प्रेरित करते हैं। इसके बाद बच्चा समाज के संपर्क में आता है। वह ध्वनियों को बार-बार सुनता है, उनका अनुकरण करता है और इस प्रकार उसका व्यवहार परिवर्तित होता जाता है। इस अनौपचारिक शिक्षण के बाद विद्यार्थी औपचारिक शिक्षण के माध्यम से अध्यापक के संपर्क में आता है। सामान्यतः शिक्षण का अर्थ है - शिक्षा देना, ज्ञान प्रदान करना, सिखाना तथा कौशल विकसित करना। हम यह भी कह सकते हैं कि समाज में रहते हुए बच्चा अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा अन्य लोगों से कुछ-न-कुछ सीखता रहता है, अतः वह भी शिक्षण है। परन्तु जब हम भाषाई-शिक्षण की बात करते हैं तो यह उपर्युक्त अनौपचारिक शिक्षण से भिन्न होता है। यह एक औपचारिक, सुनियोजित, सोद्देश्य प्रक्रिया है जिसमें बच्चे की भाषाई कौशलों की क्षमता को विकसित एवं परिमार्जित किया जाता है। भाषाई कौशल चार माने जाते हैं - सुनना (श्रवण), बोलना (भाषण), पढ़ना (पठन या वाचन), लिखना (लेखन)। इनमें प्रथम दो मुख्य कौशल हैं तथा अन्तिम दो गौण कौशल। बच्चा अनौपचारिक शिक्षण के माध्यम से प्रथम दो का ज्ञान प्राप्त कर सकता है परन्तु इनमें रह जाने वाली त्रुटियों का परिमार्जन तथा वाचन और लेखन का ज्ञान औपचारिक शिक्षण के माध्यम से सम्भव होता है और इसमें अध्यापक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अगर हम हिन्दी भाषा-शिक्षण की बात करें तो हिन्दी

हमारी राजभाषा है। इसीलिए भारतवर्ष के सभी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण अनिवार्य है। अतः असम के विद्यालयों में (विशेषकर नगाँव जिले के) हिन्दी-शिक्षण की स्थिति तथा हिन्दी भाषा अधिगम हेतु विद्यार्थियों में आई चुनौतियों का सर्वेक्षण प्रस्तुत शोध का अभिप्रेत है।

असम अहिंदी प्रान्त है और नगाँव उस प्रान्त का एक जनपद, जिसका भौगोलिक एवं शैक्षिक परिदृश्य काफ़ी विकसित है। मैं इसी जनपद की रहने वाली हूँ और इसके सभी परिवेश से भली-भाँति परिचित हूँ। नगाँव खण्ड (ब्लॉक) में वर्ष 2013 तक असम सरकार के दिए गए आँकड़ों के अनुसार कुल 276 सरकारी विद्यालय हैं जहाँ की शिक्षा-दीक्षा समृद्ध है, क्योंकि नगाँव की वर्तमान स्थिति में व्यापार, शिक्षा, सरकारी उद्योगों के कारण भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोगों का प्रवेश हो चुका है, विशेष रूप से हिन्दी भाषियों का। अतः यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिन्दी भाषा का तादात्म्य स्थापित हो जाना स्वाभाविक है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य नगाँव जनपद के विद्यालयों, विशेष रूप से उच्च विद्यालय (high schools) अर्थात् कक्षा 6 से 10 तक के स्तर के कक्षाओं में भाषा-शिक्षण का अध्ययन हिन्दी भाषा के परिप्रेक्ष्य में करना है। भाषा-शिक्षण के अंतर्गत आने वाले तथ्यों एवं कौशलों के आधार पर उक्त कक्षाओं में हिन्दी को लेकर विद्यार्थियों की कठिनाइयों को समझने की कोशिश की गई है।

प्रस्तुत शोध विषय के संबंध में निम्नलिखित साहित्यों की समीक्षाएँ हुई हैं :

i. *भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान* (चौ॰ सं॰ 1989)- व्रजेश्वर वर्मा तथा अन्य (संपा॰), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

इस पुस्तक में भाषा विज्ञान के विभिन्न संप्रदायों की उपादेयता भाषा-शिक्षण के संदर्भ में, भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में कार्य करने की संभावनाएँ, हिन्दी भाषा का स्वरूप, हिन्दी और अन्य भाषाओं की तुलना, हिन्दी शिक्षण की समस्याएँ तथा भाषा-शिक्षण के अनेकानेक पहलुओं पर विद्वान लेखकों के लेख हैं। साथ ही साथ ध्वनि, लिपि, शब्द, अर्थ, व्याकरण आदि तत्वों पर शोधात्मक लेख हैं जो हिन्दी शिक्षण के संदर्भ में अत्यधिक उपयोगी हैं।

ii. *मानक हिन्दी का शिक्षण : उपागम एवं उपलब्धियाँ (खण्ड एक : सैद्धांतिक उपागम)* (1999) -मदनलाल वर्मा, सीताराम शास्त्री (संपा॰), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

इस पुस्तक में कुल 13 लेख संग्रहीत हैं। इनमें हिन्दी भाषा-शिक्षण की वैचारिक पृष्ठभूमि, अन्य भाषा / द्विभाषिकता - बहुभाषिकता के संदर्भ में हिन्दी का शिक्षण, नई शैक्षिक नीति और हिन्दी की सैद्धांतिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

iii. *मानक हिन्दी का शिक्षण : उपागम एवं उपलब्धियाँ (खण्ड दो : शिक्षण एवं प्रविधि)* (1999) - मदनलाल वर्मा, सीताराम शास्त्री (संपा॰), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

इस पुस्तक में कुल 17 लेख संकलित हैं। इन लेखों में हिंदीतर प्रदेशों में अन्य भाषा / द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के स्वरूप एवं स्थिति पर विस्तृत चर्चा की गई है। इनमें भाषा-शिक्षण की विविध प्रविधियों, तकनीकों तथा उपागमों पर भी विशद प्रकाश डाला गया है। भाषा-शिक्षण के अंतर्गत शब्द, शब्दावली एवं समास शिक्षण पर विचार करने के साथ ही अहिन्दी भाषियों को नागरी लिपि सिखाने की विधि बतलाई गई है। भाषा-शिक्षण के लिए उपयुक्त सामग्री निर्माण और शिक्षण के मूल्यांकन की अधुनातन पद्धति को भी इन लेखों में रेखांकित किया गया है।

iv. *मानक हिन्दी का शिक्षण : उपागम एवं उपलब्धियाँ (खण्ड तीन : समस्याएँ एवं समाधान)* (1999) - मदनलाल वर्मा, सीताराम शास्त्री (संपा॰), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

इस पुस्तक में अन्य / द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण की विविध समस्याओं पर कुल 16 वैचारिक आलेख संकलित हैं। इसमें अलग-अलग प्रांतों के समाज एवं सजातेतर भाषा-भाषियों के हिन्दी शिक्षण की भाषा वैज्ञानिक, सामाजिक एवं शैक्षिक समस्याओं तथा उनके निराकरण पर विस्तार से चर्चा की गई है।

v. *हिन्दी शिक्षण का इतिहास एवं विकास* (1996) - रामलाल वर्मा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

इस पुस्तक में विगत एक हज़ार वर्षों में हिन्दी भाषा एवं साहित्य के शिक्षण-प्रशिक्षण का विकासक्रम क्षृंखलाबद्ध सोपानों में विश्लेषित एवं विवेचित किया गया है।

vi. *हिन्दी भाषा शिक्षण* (प्रथम सं॰ 2012) - डॉ॰ मुकेश अग्रवाल, के॰ एल॰ पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद :

यहाँ शिक्षा की मूलभूत अवधारणाओं के बारे में बताते हुए उन शब्दों पर विचार किया गया है जो शिक्षा से अनिवार्यतः संबद्ध हैं और भाषा-शिक्षण के संदर्भ में जिनकी सम्यक जानकारी के बिना आगे बढ़ सकना कठिन है। यहाँ भाषा-शिक्षण की अशुद्धियों पर भी विचार किया गया है तथा चारों भाषाई कौशलों - श्रवण, भाषण, वाचन और लेखन के अर्थ, महत्त्व, विकास-प्रक्रिया आदि को स्पष्ट किया गया है।

vii. *जनजाति भाषाएँ और हिन्दी-शिक्षण* (1980) - न॰ वी॰ राजगोपालन (संपा॰), केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा :

भारत के पूर्वाञ्चल के असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, मिज़ोरम, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम आदि राज्यों में विभिन्न भाषा-भाषी अनेक जनजातियाँ निवास करती हैं। प्रस्तुत पुस्तक में संकलित लेखों में जन-जाति भाषा-भाषियों को हिन्दी सीखने में जिन विशेष प्रकार की कठिनाइयों से जूझना पड़ता है उनका आकलन तथा समाधान प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रविधि 'क्षेत्र सर्वेक्षण' है जिसे अंग्रेज़ी में फ़ील्ड सर्वे कहते हैं। इस प्रविधि के द्वारा शोधार्थी को उस क्षेत्र में स्वयं जाकर अपने शोध विषय से संबद्ध सामग्री एकत्र करनी पड़ती है। व्यक्तियों से साक्षात्कार तथा पत्राचार द्वारा भी सामग्री को प्राप्त किया जाता है। इस शोध पद्धति का आधार प्रश्नावली संचयन है और यह प्रश्नावली नगाँव जिले के नगरीय सह-शिक्षण उच्च विद्यालयों में जाकर एकत्रित किया गया। तत्पश्चात निर्णय नमूना (judgement sampling) के द्वारा नमूना या सामग्री की उपलब्धता के आधार पर शोध विषय का परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण (quantitative and qualitative analyses) किया गया।

प्रस्तुत शोध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम दो अध्यायों में भाषा के सैद्धान्तिक स्वरूप को दिखाया गया है और अन्य तीन अध्यायों में भाषा के व्यावहारिक पक्ष को दिखाने की कोशिश की गई है। प्रथम अध्याय का शीर्षक है 'भाषा शिक्षण : स्वरूप एवं विकास'। इस अध्याय में भाषा के स्वरूप को दर्शाते हुए भाषा को विभिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है, जैसे - व्यक्तिगत बोली, उपबोली, बोली, उपभाषा, मानक भाषा, राष्ट्रीय भाषाएँ, साहित्यिक भाषा, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा, यांत्रिक भाषा, लिखित भाषा आदि। संस्कृत आचार्यों, आधुनिक भारतीय वैयाकरणों, पाश्चात्य विद्वानों आदि विभिन्न भाषाविदों तथा अन्य विद्वानों द्वारा समय-समय पर दी गईं भाषा की परिभाषाओं को दिया गया है। भाषा

की प्रकृति तथा अभिलक्षणों पर विचार किया गया है तथा भाषा की संरचना और भाषा प्रकार्य को भी विस्तृत रूप से दिखाते हुए हिन्दी भाषा की उत्पत्ति एवं विकासयात्रा पर पुनः प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी भाषा-शिक्षण : सैद्धान्तिक स्वरूप'। प्रस्तुत अध्याय में हिन्दी भाषा-शिक्षण के सिद्धांतों को आधार बनाकर भाषा-शिक्षण के स्वरूप, अन्य भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण के प्रयोजन, अन्य भाषा-शिक्षण की पद्धतियाँ, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण, शिक्षण सामग्रियों का मूल्यांकन आदि विषयों पर विस्तृत चर्चा करते हुए भाषाई कौशलों के बारे में बताया गया तथा शिक्षा की राष्ट्रीय नीति को दर्शाया गया है।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है 'असम तथा नगाँव में हिन्दी शिक्षण'। प्रस्तुत अध्याय में असम तथा नगाँव में हिन्दी शिक्षण की सामान्य रूपरेखा को दिखाने की कोशिश की गई है। असम में हिन्दी की नींव एवं विकास को दिखाते हुए असम में हिन्दी भाषा की स्थिति की विवेचना की गई है तथा असम में हिन्दी भाषा शिक्षण पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर विद्यार्थियों का विश्लेषण'। प्रस्तुत अध्याय में क्षेत्र सर्वेक्षण की पद्धति को अपनाते हुए हिन्दी भाषा-शिक्षण के विभिन्न कौशलों तथा हिन्दी व्याकरण को आधार बनाकर प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं संलाप आदि को शोध पद्धति के तथ्य-संचय के साधन के रूप में व्यवहार किया गया है। असम स्थित नगाँव जनपद के नगरीय सरकारी सह-शिक्षण उच्च विद्यालय तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी भाषा के अध्ययन-अध्यापन का सर्वेक्षण किया गया है। 2013 के गणना के अनुसार नगाँव जिले में 276 शासकीय विद्यालय (provincialised schools) हैं जिनमें से 140 उच्च विद्यालय

(high schools) हैं, 57 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (higher secondary schools) हैं और 79 नए शासकीय विद्यालयों (newly provincialised schools) को शामिल किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य के सर्वेक्षण के लिए जो विद्यालय स्कूल समूह परिदर्शक कार्यालय से प्राप्त हुए उनके नाम हैं - डॉ॰ एस॰ के॰ भूयाँ हाई स्कूल, मोरीकोलोंग हाई स्कूल, हैबरगाँव आदर्श हाई स्कूल, रत्नकान्त बोरककोटी हाई स्कूल। कुल मिलाकर इन चारों विद्यालयों में से प्रस्तुत शोध के लिए 82 नमूने लिए गए हैं और मुख्यतः हिन्दी भाषा-शिक्षण के चारों कौशलों (श्रवण, भाषण, पठन, लेखन) तथा हिन्दी व्याकरण के आधार पर प्रस्तुत अध्यायों में विद्यार्थियों के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण किए गए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है 'हिन्दी भाषा शिक्षण के आधार पर शिक्षकों का विश्लेषण'। प्रस्तुत अध्याय में नगाँव जिले में हिन्दी भाषा-शिक्षण के आधार पर शिक्षकों के परिमाणात्मक तथा गुणात्मक स्वरूप को दर्शाया गया है तथा परिमाणात्मक तथा गुणात्मक स्वरूप के आधार पर विद्यार्थियों तथा शिक्षकों का विश्लेषण तथा इनसे प्राप्त उपलब्धियों की विवेचना की गई है।

निष्कर्ष रूप में परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विश्लेषण से जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं वे निम्नलिखित हैं :

- प्रयोग के लिए कुल 82 नमूने लिए गए।
- भाषा-कौशल के आधार पर 71.79% श्रवण कौशल में पारंगत
- भाषा-कौशल के आधार पर 73.54% भाषण कौशल में पारंगत
- भाषा-कौशल के आधार पर 62.44% पठन कौशल में पारंगत
- भाषा-कौशल के आधार पर 60.22% लेखन कौशल में पारंगत

- भाषा-कौशल के आधार पर 85.04% व्याकरण में पारंगत
- घर तथा कक्षा में असमिया भाषा का अधिकतर प्रयोग
- भाषा-शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण-पद्धतियों का कम प्रयोग
- भाषा-शिक्षण के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्रियों का अभाव
- अन्य विषयों के शिक्षकों द्वारा हिन्दी-शिक्षण
- निर्धारित वैयाकरणिक पुस्तकों का अभाव
- भाषा प्रयोगशालाओं का अभाव

-जशोधरा बोरा